गुरुमाई चिद्विलासानन्द के जीवन व उनकी धरोहर पर एक वार्ता

मीरा लॉबा-ज़पीरो

श्री मुक्तानन्द आश्रम

१ जून, २०१७

सद्‌गुरुनाथ महाराज की जय!

जून माह की पहली तारीख़! ‘आनन्दमय जन्मदिवस’ का प्रभात!

इस अद्‌भुत, विलक्षण और विस्मय से भरे ‘आनन्दमय जन्मदिवस’ सत्संग में आप में से हर एक का स्वागत करना मेरा परम सौभाग्य है।

आमच्या गुरुमाई, आमचा सत्संग।

मराठी भाषा के इस वाक्य का अर्थ है, “हमारी गुरुमाई, हमारा सत्संग।”

मेरा नाम मीरा लॉबा-ज़पीरो है। मैं एक विज़िटिंग सेवाकर्ता हूँ, और साथ ही प्रेमोत्सव विभाग में, घर से सेवा अर्पित करती हूँ। इस ‘आनन्दमय जन्मदिवस’ सत्संग में सूत्रधार की सेवा अर्पित करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है।

एक महान आत्मा के जन्म का सम्मान करने के लिए प्रकृति माँ अपनी अपूर्व प्रतिभा, अपनी चकित कर देने वाली रचनात्मकता को प्रदर्शित करती है। क्या आपने बार-बार ऐसा होते हुए नहीं देखा है?

कल रात जब हम बाबा जी के जन्मदिवस महोत्सव का समापन कर रहे थे और ‘आनन्दमय जन्मदिवस’ की चौखट पार करने की तैयारी में थे, प्रकृति ने श्री मुक्तानन्द आश्रम में एक अलौकिक दृश्य प्रस्तुत किया।

आश्रम के ऊपर का आकाश बादलों से आच्छादित था। बड़े, श्वेत, लहराते मेघ मन्द गति से विशाल नीले गगन में बह रहे थे। ढलता हुआ सूरज बादलों को पीछे से प्रकाशित कर रहा था जिससे वे गुलाबी व स्वर्णिम दीप्ति से दमक उठे। अर्धचन्द्र भी उदित होकर चमक रहा था।

केवल इतना ही नहीं! यदि आप बिलकुल सही समय पर बाहर निकले हों तो आपको इन्द्रधनुष भी दिखाई दिया होगा। वह अप्रतिम था — सान्ध्य आकाश में धुँधले रंगों का एक मखमली स्तम्भ बादलों में से प्रकट हो रहा था।

फिर, जैसे-जैसे रात्रि का आगमन होने लगा, गहरे नीले कृष्णवर्णी बादल श्री मुक्तानन्द आश्रम के ऊपर छाने लगे; बिजली चमकने लगी, बादल गरजने लगे और स्वर्ग के द्वार खुलकर घनघोर वर्षा होने लगी। और आज प्रातः सूर्योदय के समय विशाल, निरभ्र, नीले आकाश में जब सूर्य देवता ने अपना आसन ग्रहण किया तो स्पष्ट-स्वच्छ उजाला फैला हुआ था।

हमें 'आनन्दमय जन्मदिवस' में प्रवेश कराने का कितना अद्‌भुत तरीक़ा! प्रकृति हमेशा ही जानती है।

सिद्धयोग पथ पर किसी का भी जन्मदिन एक अवसर होता है, उनकी अच्छाई, मधुरता, उनके योगदान, मूल्य और उनके कितने ही गुणों का उत्सव मनाने का।

तो ज़रा कल्पना कीजिए, हमारी श्रीगुरु गुरुमाई चिद्विलासानन्द के जन्मदिन का उत्सव मनाना। हाँ! क्षणभर के लिए कल्पना कीजिए। सोचिए कि आपके लिए इसका क्या अर्थ है।

इस वर्ष, 'आनन्दमय जन्मदिवस' का शुभारम्भ कैसे किया जाए और पूरे माह यह महोत्सव कैसे मनाया जाए इसके लिए तीन सिद्धयोगियों ने एक अद्‌भुत सुझाव दिया। ये तीनों सिद्धयोगी बालपन से ही सिद्धयोग की सिखावनियों का अभ्यास व सेवा करती आ रही हैं।

कैलीफ़ोर्निया के एल सोब्रान्ते से गरिमा बोरवणकर, कैलीफ़ोर्निया के रैनचोज़े पेनेस्कीतोज़ से वाणी अग्रवाल, और ऑस्ट्रेलिया के साउथ यारा से लीलावती स्टुअर्ट ने एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के लाइव इवेन्ट्स विभाग [वह विभाग जो सत्संगों का आयोजन करता है] को बताया कि वे श्रीगुरुमाई के साथ घटे उन प्रसंगों के बारे में बताना चाहती हैं जिनमें उन्हें गुरुमाई जी से प्रत्यक्ष रूप में सिखावनियाँ प्राप्त हुईं।

जब लाइव इवेन्ट्स विभाग के सेवाकर्ताओं को यह सुझाव प्राप्त हुआ, तो उन्होंने इसमें छिपी अगाध सम्भावनाओं को पहचाना। श्रीगुरुमाई के साथ घटे प्रसंगों के बारे में बताना, उनकी धरोहर का एक

भाग बनता है और साथ ही यह श्रीगुरुमाई के प्रति हमारे प्रेम को यथार्थ रूप प्रदान करता है। इसके अलावा, जब ये सिद्धयोगी श्रीगुरुमाई के साथ घटे अपने जीवन-रूपान्तरणकारी प्रसंगों को बताएँगी तो यह अन्य सभी को भी ऐसा ही करने के लिए प्रेरणा देगा।

लाइव इवेन्ट्स विभाग के सेवाकर्ताओं को यह भी लगा कि यह बहुत अद्‌भुत होगा यदि श्री मुक्तानन्द आश्रम में सभी, श्रीगुरुमाई के साथ अपने प्रसंगों व अनुभवों को याद करें, एक-दूसरे को बताने के लिए उन्हें तैयार करें और इस भेंट में अपना योगदान दें — ऐसी भेंट जो आने वाली पीढ़ियों के लिए शक्तिपुंज का एक कोष बन जाएगी।

इसलिए लाइव इवेन्ट्स विभाग ने ऐसे प्रसंगों व अनुभवों को बताने के लिए, सत्संगों की एक श्रृंखला की रचना की जो कि श्री मुक्तानन्द आश्रम में जून २०१७ में पूरे माहभर आयोजित किए जाएँगे। इस श्रृंखला का शीर्षक है :

सुरभि, स्मरण, अभिज्ञान

गुरुमाई चिद्विलासानन्द का जीवन व उनकी धरोहर

इन सत्संगों में हम, श्रीगुरुमाई से प्रत्यक्ष रूप में सिखावनियाँ प्राप्त होने के अनोखे प्रसंग व अनुभव सुनेंगे। इनमें से कई अनुभव सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर दिए जाएँगे ताकि सार्वभौमिक संघम् भी इन्हें पढ़ सके। इससे विश्वभर के सिद्धयोगियों व नए जिज्ञासुओं को भी श्रीगुरुमाई के विषय में अपनी कथाएँ लिखने व बताने के लिए मदद मिलेगी।

सुरभि, स्मरण, अभिज्ञान— ये शब्द, श्रीगुरुमाई के विषय में अपनी कथाओं को बताने के अनुभव का वर्णन करते हैं।

> ‘सुरभि’ यानी एक मधुर व प्रफुल्लित करने वाली सुगन्ध। इससे पहले कि कोई याद हमारे मन की आँखों के सामने पूरी तरह से उभरे, एक सुगन्ध हमारे किसी पुराने अनुभव को, उसके सूक्ष्म भाव व प्रेरणा सहित, तुरन्त ही जगा सकती है। हमारी सबसे गहरी यादों को ताज़ा करने में सुगन्ध बहुत ही महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है।
>
> और ‘सुगन्ध’ शब्द इस वर्ष हमारे लिए विशेष महत्त्व रखता है . . . वर्ष २०१७ के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश के कारण!

वर्ष २०१७ के लिए श्रीगुरुमाई का सन्देश है :

> दिव्य हृदय की सुगन्ध को अपने श्वास में भर लो।
> परम आत्मा के प्रकाश में मुदित हो जाओ।
> दिव्य हृदय की कल्याणकारी शक्ति के साथ अपने प्रश्वास को मृदुलता से बहने दो।

‘स्मरण’ — श्रीगुरुमाई से प्राप्त सिखावनियों को याद करके हम न केवल अपने हृदय में श्रीगुरुमाई के साथ जुड़ जाते हैं बल्कि हम इस स्मृति को सँजोकर रखते हैं ताकि दूसरे भी इसे ग्रहण कर सकें और इससे सीख पाएँ। यह एक जीती-जागती स्मृति बन जाती है और श्रीगुरुमाई की जीती-जागती धरोहर बन जाती है।

‘अभिज्ञान’— जब हम दूसरों द्वारा बताई गई कथाओं को अपने अन्दर उतारते हैं, तो ये कथाएँ हमारे अपने प्रसंगों व अनुभवों के बारे में एक अभिज्ञान कराती हैं, एक समझ देती हैं, कि कैसे गुरुमाई जी की कृपा ने हमें स्पर्श किया है। वे साधना के हमारे अपने अनुभवों को दृढ़ता प्रदान करती हैं, उनकी पुष्टि करती हैं। हमें अभिज्ञान हो जाता है। इस अभिज्ञान के साथ, अन्तर में एक कीमियागरी की प्रक्रिया का आरम्भ होता है।

सुरभि, स्मरण, अभिज्ञान

गुरुमाई चिद्विलासानन्द का जीवन व उनकी धरोहर

अब, मैं आपको श्रीगुरुमाई के जीवन व उनकी धरोहर के कुछ पहलू बताना चाहती हूँ।

☼

वह २४ जून का दिन था, जब दक्षिण भारत में समुद्रतट पर बसे मैंगलुरू शहर के निकटस्थ एक पर्वत की तलहटी में, हमारी परमप्रिय श्रीगुरुमाई ने जन्म लिया था। कैसी मधुर सुगन्ध रही होगी हवाओं में उस दिन; कैसे-कैसे अलौकिक रंगों से सजा होगा आकाश! भारत के महाकाव्यों में, महान आत्माओं के जन्म के सम्मान में प्रायः देवी-देवताओं को स्वर्ग से पुष्प-वर्षा करते हुए चित्रित किया जाता है। जब मैं श्रीगुरुमाई के इस धरती पर अवतरित होने के बारे में सोचती हूँ तो मेरे मन में भी ऐसी ही छवि अभरती है।

श्रीगुरुमाई एक जगद्गुरु हैं — वे सम्पूर्ण विश्व के लिए एक सदेह सिद्धगुरु हैं। सन् १९८२ से श्रीगुरुमाई सिद्धयोग पथ की श्रीगुरु हैं। पैंतीस वर्षों से श्रीगुरुमाई, विश्वभर के देशों व संस्कृतियों के, जीवन के विविध क्षेत्रों से आने वाले, हर आयु के जिज्ञासुओं को शक्तिपात दीक्षा प्रदान कर रही हैं, अपना ज्ञान प्रदान कर रही हैं और ध्यान की शिक्षाएँ प्रदान कर रही हैं।

☼

तीन दशकों की कालावधि में, श्रीगुरुमाई ने 'टीचिंग विज़िट्स्' द्वारा विश्वभर में यात्राएँ की हैं। श्रीगुरुमाई ने सोलह देशों के १६८ शहरों की यात्रा कर, लोगों के अपने शहरों में सिद्धयोग पथ से उनका परिचय कराया है। इन यात्राओं के दौरान, उत्कृष्ट, अत्यन्त स्वच्छ सत्संग-हॉल बना लिए गए सभाकक्षों, होटलों और खुले मैदानों में। शाब्दिक, तथा भौतिक अर्थ में श्रीगुरुमाई के साथ हुए सत्संगों व शक्तिपात ध्यान-शिविरों ने इन स्थानों को पवित्र कर दिया, जहाँ हज़ारों लोगों ने सिद्धयोग के अभ्यास किए।

टेक्नोलॉजी के विकास के साथ, जिज्ञासुओं को सिद्धयोग पथ की वेबसाइट द्वारा, इस विश्व में श्रीगुरुमाई के दिव्य कार्य की एक झलक मिलती है। वेबसाइट के माध्यम से नए जिज्ञासुओं को सिद्धयोग की सिखावनियों का अभ्यास करने के लिए मार्गदर्शन मिलता है और अनुभवी सिद्धयोगी श्रीगुरुमाई की कृपा व आशीर्वाद के साथ अपने जुड़ाव को और भी अधिक दृढ़ बनाते हैं।

☼

सिद्धयोग पथ की वेबसाइट के अलावा, श्रीगुरुमाई की सिखावनियाँ, प्रकाशित किए गए उनके प्रवचनों व लेखों के विशाल संग्रह के रूप में भी संगृहीत की गई हैं। श्रीगुरुमाई के प्रज्ञान को एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन और गुरुदेव सिद्धपीठ द्वारा बीस पुस्तकों व पत्रिकाओं में हज़ारों लेखों के रूप में सभी के लिए उपलब्ध कराया गया है। इन प्रकाशित की गई रचनाओं में, श्रीगुरुमाई मानव-स्वभाव को समझने की अपनी विलक्षण क्षमता द्वारा, हमारे लिए परम सत्य तक पहुँचने का एक सेतु निर्माण करती हैं, जिसके बिना वह सत्य अज्ञात ही रह जाता। और श्रीगुरुमाई के काव्य में, मन के परे जाकर हृदय की गहनतम ललक को व्यक्त करने की उनकी दैवप्रेरित सामर्थ्य का परिचय मिलता है।

श्रीगुरुमाई की अद्‌भुत, हृदय को खोल देने वाली रचनाओं ने हर आयु के लोगों को प्रभावित किया है और दूर भविष्य में भी करती रहेंगी।

☼

हम सौभाग्यशाली हैं क्योंकि हमें न केवल श्रीगुरुमाई की लिखित रचनाएँ प्राप्त हैं बल्कि हम उनकी वाणी की ध्वनि को भी सुन सकते हैं, हम उनकी अत्युत्कृष्ट संगीत-रचनाओं को सुन सकते हैं। श्रीगुरुमाई ने १५० से भी अधिक संगीत-रचनाएँ की हैं जिनमें सिद्धयोग नामसंकीर्तन, भजन, स्तोत्र तथा आरती शामिल हैं। श्रीगुरुमाई अपनी हर संगीत-रचना को अपने इस संकल्प से अनुप्राणित करती हैं कि गाने वाला व सुनने वाला, दोनों ही अपने अन्दर आदिनाद के स्पन्द की अनुभूति कर सकें। श्रीगुरुमाई ने सिद्धयोग पथ पर चलने वाले हर एक व्यक्ति के लिए सिद्धयोग संगीत को एक मुख्य अभ्यास बनाया है, भले ही उस व्यक्ति का संगीत का ज्ञान और कौशल कितना भी हो। उन्होंने सभी के हृदय का गीत जाग्रत कर दिया है।

☼

गुरुमाई जी ने बच्चों की तरफ़ सबसे प्यारभरा और विशेष ध्यान दिया है तथा उन्होंने बच्चों के लिए अनगिनत तरीक़े बनाए हैं जिससे बच्चे अपने हृदय की पवित्रता से जुड़ सकें। एक विशेष दृश्य जो हम देखते हैं वह है, गुरुमाई जी एक बच्चे के साथ बैठी हैं, उससे प्रश्न पूछ रही हैं, और उसे मार्गदर्शन दे रही हैं ताकि वह अपने अन्दर के प्रज्ञान व उन सद्‌गुणों को प्रकट कर सके जिन पर वह जीवनभर निर्भर रह सकता है।

सन् १९९८ में, श्रीगुरुमाई ने Golden Tales [गोल्डन टेल्स] नामक नाटकों की शृंखला का सूत्रपात किया। उस दौरान श्री मुक्तानन्द आश्रम में होने वाली सिद्धयोग पारिवारिक रिट्रीट्स् में भाग लेने वाले बच्चों तथा किशोर-युवाओं ने इन नाटकों में अभिनय किया था। इन नाटकों के माध्यम से बच्चों तथा युवाओं ने देवी-देवताओं व सन्तों के जीवन के बारे में सीखा। इन नाटकों में अभिनय करने की सेवा से बच्चों में इस क्षमता का विकास हुआ कि वे अपना सर्वोत्कृष्ट अर्पण करें व सेवा के अमृतमय फल का अनुभव करें। आज भी, सिद्धयोगी बताते हैं कि कैसे ‘गोल्डन टेल्स’ के नाटकों में अभिनय करना उनके

पलने व बड़े होने में एक निर्णायक मोड़ था; तथा वे यह भी बताते हैं कि ‘गोल्डन टेल्स’ को देखना उनके लिए एक ऐसी याद है जिसे वे कभी नहीं भूलेंगे।

☼

एक अन्य माध्यम जिसके द्वारा गुरुमाई जी विश्वभर में लोगों के हृदय तक पहुँचती हैं, वह है उनका पत्र-व्यवहार। जो लोग उन्हें पत्र लिखते हैं उनकी प्रार्थनाओं को गुरुमाई जी जिस सावधानी व आत्मीयता से उत्तर देती हैं वह अतुलनीय है।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि गुरुमाई जी ने लाखों पत्रों को पढ़ने व उनका उत्तर देने के लिए कितना समय दिया होगा? — वयस्कों के पत्र, बच्चों व युवाओं के पत्र, क़ैदियों के पत्र, उन सभी के पत्र जो अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करना चाहते हैं, इत्यादि।

श्रीगुरुमाई का समस्त पत्राचार एक महासाहित्य है, जिसमें उनका प्रत्यक्ष मार्गदर्शन और उनके आशीर्वाद समाविष्ट हैं; यह गुरु-शिष्य सम्बन्ध के माहात्म्य की गाथा है। यह श्रीगुरुमाई के असीम प्रेम व करुणा के माहात्म्य की गाथा है ।

☼

विश्व के बड़े हादसों या चुनौतियों के समय भी श्रीगुरुमाई ने हमें आगे बढ़ने का रास्ता बताया है। श्रीगुरुमाई ने हमें इसके बारे में सिखाया है कि सामंजस्य को निश्चित रूप से विकसित करने में, प्रकृति व अपने समाज को विकसित करने में सबका एक ही संकल्प हो तो उसमें कितनी शक्ति होती है; उन्होंने प्रार्थनाएँ भेजने व आशीर्वाद अर्पित करने हेतु सिद्धयोग संघम् को मार्गदर्शन दिया है।

सन् २००१ में, श्रीगुरुमाई ने वैश्विक समुदाय के सम्मानार्थ सत्संगों का आयोजन किया था। इन सत्संगों का विशेष केन्द्रण था — यह पहचानना कि हम सबकी मानवता एक ही है, और यह भी कि सर्वाधिक कठिन समय का सामना करने के लिए हम अपनी सिद्धयोग साधना से प्राप्त फलों का सहारा लें।

☼

श्रीगुरुमाई का सम्पूर्ण जीवन सिद्धयोग की सिखावनियों के प्रति व लोगों को परमसत्य का प्रत्यक्ष अनुभव उपलब्ध कराने के लिए समर्पित है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, श्रीगुरुमाई ने पिछले पैंतीस वर्षों में एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के सेवाकर्ताओं को सेवा के आध्यात्मिक अभ्यास के लिए सिद्धान्त व मार्गदर्शन प्रदान किया है। प्रज्ञान का यही भण्डार फ़ाउन्डेशन के कार्य का केन्द्रबिन्दु है और उसकी अतुलनीय उपलब्धियों का स्रोत है।

एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन सार्वभौमिक सिद्धयोग अभियान [मिशन] की प्रमुख संस्था है और इसका उद्देश्य है, सिद्धयोग की शिक्षाओं को सुरक्षित रखना, उनका परिरक्षण करना और उन्हें प्रसारित करने में मदद करना। श्रीगुरुमाई ने फ़ाउन्डेशन के सेवाकर्ताओं को सिखाया है कि वे नेतृत्व की इस भूमिका को अंगीकार करें, और ऐसा करने के लिए सेवा में एकता का भाव रखें। जब सेवाकर्ता श्रीगुरुमाई के सिद्धान्तों व मार्गदर्शन को आत्मसात् कर उन्हें लागू करते हैं तो उनके प्रयत्नों के प्रभाव प्रसरित होकर सम्पूर्ण संघम् में फैलते हैं।

☼

मानवता के प्रति श्रीगुरुमाई की परिदृष्टि ‘प्रसाद प्रॉजेक्ट’ नामक धर्मार्थ परियोजना के रूप में भी अभिव्यक्त हुई है, जिसकी इस वर्ष २५वीं वर्षगाँठ मनाई जा रही है। ‘प्रसाद’ [PRASAD] के अंग्रेज़ी अक्षरों का पूरा रूप है — फ़िलॅन्थ्रॉपिक रिलीफ़ ऑल्ट्रूइस्टिक सर्विस एन्ड डिवेलोपमॅन्ट [Philanthropic Relief Altruistic Service And Development]।

‘प्रसाद’ परियोजना व भारत में इसकी सह-संस्था ‘प्रसाद चिकित्सा’ का शुभारम्भ, श्रीगुरुमाई ने क्रमशः सन् १९९२ व १९९४ में किया था। ये संस्थाएँ श्रीगुरुमाई की करुणा व उदारता का प्रकट रूप हैं। इन संस्थाओंने हज़ारों लोगों के जीवन-स्तर को बेहतर बनाया है। श्रीगुरुमाई के मार्गदर्शन से कार्यरत ‘प्रसाद’ उन धर्मार्थ संस्थाओं में से है जिसकी, अपने कार्य की प्रभावकारिता के लिए अत्यन्त सराहना की जाती रही है।

☼

भारत के प्राचीन शास्त्रों में निहित ज्ञान के प्रति अपने असीम आदरवश श्रीगुरुमाई ने सन् १९९७ में 'मुक्तबोध भारतीय प्राच्य विद्या शोध संस्थान' [मुक्तबोध इन्डोलॉजिकल रीसर्च इन्स्टिट्यूट] का शुभारम्भ किया। इस संस्थान के कार्य के माध्यम से तीन सौ से भी अधिक ग्रन्थों को सुरक्षित व संरक्षित किया गया है जो अन्यथा जगत से लुप्त हो चुके होते। इनमें से कई ग्रन्थों को मुक्तबोध की डिजिटल लाइब्रेरी द्वारा जन-साधारण के लिए उपलब्ध कराया गया है। आज भी मुक्तबोध का बहुमूल्य कार्य दिन-प्रति-दिन सक्रियता से जारी है। इसके परिणमस्वरूप, अब उन दुर्लभ तथा अनमोल ग्रन्थों को संगृहीत रखने के लिए एक भण्डार का निर्माण हुआ है जिससे ये ग्रन्थ आज आसानी से उपलब्ध हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए भी होंगे।

☼

श्रीगुरुमाई के जीवन का, श्रीगुरुमाई की धरोहर का परिमाण शब्दों से परे है। वार्ताओं, व्याख्याओं या पुस्तकों में इसे समाहित नहीं किया जा सकता — यह उनसे भी परे है। सच तो यह है कि हमारी बौद्धिक क्षमता से जितना समझा जा सकता है, यह उससे भी परे है।

फिर भी हमारे पास अपनी कहानियाँ हैं। हमारे अपने अनुभव हैं, गुरुमाई जी से सिखावनियाँ प्राप्त करने के, उनके वचनों व जीवन जीने के उनके तरीक़े से सीखने के अनुभव। इनमें से हर एक कहानी एक पहलू को चित्रित करती है कि श्रीगुरुमाई कौन हैं और वे कैसे सिखाती हैं। ये कहानियाँ एक प्रवेशद्वार हैं जिसके माध्यम से भावी पीढ़ियाँ, श्रीगुरुमाई के सान्निध्य में रहे सिद्धयोगियों की आँखों से देखते हुए, श्रीगुरुमाई के प्रज्ञान, उनकी हँसी व करुणा की अनुभूति करेंगी।

इन कहानियों में हमें ज्ञात होता है कि गुरुमाई जी की कृपा का हरेक जिज्ञासु के जीवन पर, पशुओं व प्रकृति पर और पूरे विश्व पर क्या प्रभाव होता है।

एक क्षण के लिए विचार करें, कि अभी यहाँ श्रीनिलय में हमारे पास गुरुमाई जी की कितनी कहानियाँ हैं। आपमें से हर एक के पास, कितनी कहानियाँ होंगी? यदि हम इस हॉल में घूमें और हममें से हर एक की कहानियों को जोड़ दें तो कितनी कहानियाँ हो जाएँगी हमारे पास? और फिर, यदि हम सार्वभौमिक संघम् के सभी सिद्धयोगियों से उन सबकी कहानियाँ भी जोड़ लें तो क्या होगा?

अब, कल्पना करें कि वह चित्र कैसा होगा जब सार्वभौमिक संघम् के सिद्धयोगी हम सभी की कहानियों को एकत्रित करेंगे। यह गुरुमाई जी के जीवन व उनकी धरोहर को अभिव्यक्त करने वाली ऐसी सुन्दर चित्रकारी है जिसमें ये कहानियाँ एक-दूसरे में पिरोई और सजाई हुई हैं।

कई मायनों में, श्रीगुरुमाई की धरोहर जिज्ञासुओं के दिलों में ज़िन्दा है—उन सभी दिलों में जिन्हें गुरुमाई जी की कृपा ने, उनकी सिखावनियों व सान्निध्य ने खोल दिया है; उन ज़िन्दगियों में जिन्हें गुरुमाई जी ने हमेशा के लिए बदल दिया है, और भी ख़ूबसूरत बना दिया है।

ज़रा सोचिए : आप श्रीगुरुमाई की सवोत्कृष्ट कलाकृति हैं। आप श्रीगुरुमाई की शक्ति को, गुरुमाई जी के प्रेम को, गुरुमाई जी के प्रज्ञान को धारण किए हुए हैं। जब आप गुरुमाई जी के साथ घटी अपनी कहानियाँ बताएँ तो यही बोध रखते हुए बताएँ।

जब आप गुरुमाई जी के साथ घटी अपनी कहानियाँ एक-दूसरे को और सार्वभौमिक संघम् को बताते हैं तो आप श्रीगुरुमाई की धरोहर को जीवन्त रखते है और भविष्य के लिए उसे संरक्षित रखते हैं। ऐसा करना आप आपना मंगल कर्तव्य भी मान सकते हैं।

जब आप अपनी कहानियाँ लिखते हैं तो आप अपने अनुभवों की कलाकृति की रचना कर रहे होते हैं, जो अनन्तकाल तक उपलब्ध रहेगी। यह महत्त्वपूर्ण है कि आप ऐसा न सोचें कि आपकी कहानी बताने योग्य है या नहीं। यदि इसने आप पर प्रभाव डाला है, यदि इसने आपकी साधना को विकसित व रूपान्तरित किया है, तो यह अवश्य ही उपयुक्त है।

मैं आपको आमन्त्रित करती हूँ कि गुरुमाई जी की उपस्थिति का महोत्सव मनाने की खुशी में, गुरुमाई जी की भव्य धरोहर की महानता व उसमें अपनी भूमिका को ध्यान मे रखते हुए, आप अपनी कहानी बताएँ।

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।